

ब्रुचीड़ भूंगः भंडारित मूँगफली के लिए एक खतरा

हरीश जी., नटराज एम.वी., हर नारायण मीणा एवं एस. डी. सावलिया
मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़-362 001

मूँगफली (एरेकिस हायपोजिया एल.) एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है, जिसमें 40-50% तैल, 20-25% प्रोटीन और 10-15% कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है। यह मुख्य रूप से एशिया और आफ्रिका के अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में उगाई जाती है। भारत में मूँगफली बड़े पेमाने पर उत्पादन मुख्यतः छः राज्यों में केंद्रित है; गुजरात, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, राजस्थान और महाराष्ट्र। मूँगफली प्रायः फली के रूप में या दाने के रूप में भंडारित की जाती है। एशिया में मूँगफली उत्पादन में 10-25% कटाई-उपरांत हानि होती है। मूँगफली ब्रुचीड़ भूंग (केरिडोन सेरेटस ओलिवर) मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार की हानि पहुँचाने के कारण महत्वपूर्ण कीट है।

विवरणः

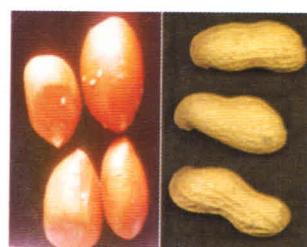
मूँगफली ब्रुचीड़ भूंग, एशिया और आफ्रिका में व्यापक रूप से पाया जाता है। यह म्यानमार, हवाई, भारत, इंडोनेशिया, ईरान, ईजराईल, जोर्डन, मेक्सिको, न्यूजीलैंड, नाइजीरिया, पाकिस्तान, श्रीलंका, सूडान, थाईलैंड, युगांडा और ओस्ट्रेलिया जैसे देशों में पाया जाता है। भारत में यह भूंग आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, केरल और ओडिशा में पाया जाता है।

जीवन चक्रः

प्रौढ़ भूंग 4-7 मी. मी. लंबा और प्रमुख पिछले पैरों के साथ 5 मी. मी. चौड़ा होता है। एक गर्भवती मादा 20-30 मलाईदार सफेद अंडे देती है, जो मूँगफली खोल या गुठली (चित्र-1) के साथ चिपका रहता है। उष्मायन अवधि 4 से 6 दिन के लिए बदलती है, ग्रब का विकास 40 से 45 दिनों में पूरा हो जाता है और पोटा संबंधी चरण लगभग 15 दिनों के लिए रहता है। कभी कभी, विकसित ग्रब फली से निकल कर बोरों के नीचे कोषस्थ हो जाता है। इस अवस्था में मूँगफली के दाने



ग्रब



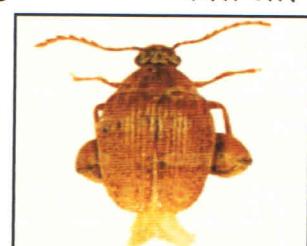
अंडे



फली और दाने की हानि



कोषस्थ कीट



प्रौढ़ भूंग

मूँगफली ब्रुचीड़ भूंग का जीवन चक्र

बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो जाते हैं और बीज, तेल निष्कासन तथा मानव उपभोग के लिए योग्य नहीं रहता है। अनुकूलतम् परिस्थितियों ($25-30^{\circ}\text{C}$ तापमान और 70-90% सापेक्ष आर्द्रता) के अंतर्गत, सी. सर्टेंट्स अपना जीवन चक्र लगभग 60 दिनों में पूरा करता है। और दाने के अंदर भूषणपोष को खा जाता है। अंतिम इन्स्टार ग्रब जब तक छेद बना कर बाहर नहीं आता, तब तक नुकसान का पता नहीं चल पाता है। यह फली और दाने में लगभग क्रमशः 80 और 70% तक नुकसान करता है। इसके कारण फली तथा दाने का वजन क्रमशः 55 और 50% तक कम हो जाता है। क्षतिग्रस्त फली तथा दाने हानिकारक कवक से भी प्रभावित हो जाते हैं, इसलिए मानव उपभोग के योग्य नहीं रहते हैं।

वैकल्पिक परपोषी:

मूँगफली के अलावा इसके प्रमुख परपोषी इमली, बबूल, सिरी, पर्वत आबनूस, तेज पत्ता, पोंगम आदि हैं।

नुकसान:

प्राथमिक संक्रमण खेत से ही शुरू होता है, जो भंडारण के दौरान भृंग की स्थापना में महत्वपूर्ण है। मादा भृंग, फली और दाने पर अंडे देती हैं, नव हैच्ड ग्रब फली और दाने के अंदर भूषणपद्धति को खा जाता है।

प्रबंधन:

1. सफाई और भंडारण से पहले बोरे तथा गोदाम का धूमन करना चाहिए।
2. फली को उचित सुखाने के लिए अनुकूलतम् आर्द्रता अंश को 7% से कम बनाए रखना जरूरी है।
3. एल्युमिनियम फॉस्फाईड की गोलियाँ हवा बंद गोदाम में 2-3 (5 ग्रा.) गोलियाँ प्रती टन फली में रखें।